

मामा की लड़की से प्यार हो गया

“यह कहानी मेरी और मेरे मामा की लड़की खुशी की है. जब मैं कॉलेज की पढ़ाई के लिए शहर गया था तो किस तरह मुझे मेरे मामा की लड़की बस में मिली, उससे प्यार कैसे हुआ, यह कहानी में पता चलेगा. ...”

Story By: (Romeo77)

Posted: Sunday, August 19th, 2018

Categories: [भाई बहन](#)

Online version: [मामा की लड़की से प्यार हो गया](#)

मामा की लड़की से प्यार हो गया

दोस्तो, मेरा नाम रोमियो है. मैं जयपुर के पास एक गांव का रहने वाला हूँ. मेरी उम्र 22 वर्ष है. जब मैं 18 साल का था तब कॉलेज की पढ़ाई के लिए मुझे शहर जाना था. पापा और मैं दोनों शहर गए. सबसे पहले कॉलेज में जा कर मेरा दाखिला कॉलेज में करवाया गया.

कॉलेज शहर से थोड़ा बाहर था.. वहीं पास में हॉस्टल था. पापा और मैं वहां गए और हॉस्टल के वार्डन से बात की. इसके बाद पापा ने मुझे वहीं रहने के लिए रख दिया और फीस जमा करवा दी. मुझे कुछ जरूरी सामान दिला कर पापा गाँव जाने के लिए कहने लगे. उनसे विछोह के कारण मैं कुछ उदास हो गया. शहर में किसी को जानता नहीं था. वैसे शहर में मेरे रिश्तेदार रहते थे, पर पापा नहीं चाहते थे कि मैं वहां जाऊं, इसलिए हॉस्टल में ही रखा.

पापा ने मुझे कुछ रुपये दिए और चले गए. मैं बहुत उदास था. वार्डन ने मुझे मेरा कमरा दिखाया तो मैं वहां गया और अपना जो भी सामान लाया था, वो वहां रख कर सो गया. शाम को जब नाश्ते का टाइम हुआ, तो एक लड़का उठाने आया तो मैं उठा.

नया सत्र चालू हुआ था तो अभी काफी लड़के आये नहीं थे. हम 8-10 लोग ही थे. उसी दौरान उन सबसे जान पहचान हुई. वो सब लोग भी मेरी तरह पहली बार घर छोड़ कर आये थे. उनसे बात होने के बाद थोड़ा अच्छा लगा. सबने बाहर घूमने जाने का प्लान बनाया, जिससे सबका मन शहर में लग जाए.

मैं भी जाने को तैयार हो गया. हम सब लोग घूमने गए और रात को दस बजे आये. वार्डन हॉस्टल में नहीं था इसलिए कोई प्रॉब्लम नहीं हुई. फिर ऐसे ही 1-2 महीने निकल गए. अब सब अच्छा लगने लगा था.

घर की याद भी कम आने लगी थी, लेकिन घर तो घर है. घर वालों से मिले हुए बहुत समय हो गया था, इसलिए घर जाने का मन था. ऐसे में एक हफ्ते की कॉलेज की छुट्टी हुई.. तो सब लड़के घर जाने के लिए तैयारी करने लगे. मैंने भी अपने कपड़े पैक किये और सब दोस्तों को बाय बोलकर गाँव आ गया. घर आकर अच्छा लग रहा था. माँ भी खुश हुई.

एक हफ्ता कैसे निकला, पता ही नहीं चला. वापस हॉस्टल जाने का टाइम हो गया. तैयार हो कर मैं बस स्टैंड आया.. बस की टिकट ली और बस में चढ़ गया. जैसे ही बस में चढ़ा तो मैंने एक लड़की को देखा. वो मेरे मामा की लड़की खुशी थी. वो बहुत खूबसूरत थी, उसने इस वक्त पटियाला सूट पहना था.

वो भी मुझे पहचान गयी. मुझे देखकर वो बहुत खुश हुई. वो मुझसे 4 साल बड़ी थी. मैं भी उसे देख कर खुश हुआ. उसे मैंने हैलो बोला, उसने भी मुझे हैलो बोला. मैं उसके पास ही बैठना चाहता था, लेकिन वहां कोई सीट खाली नहीं थी.

मैंने कहा- यहाँ जगह नहीं है, मैं पीछे जाकर बैठता हूँ.

मैं बस में पीछे की सीट पर जाकर बैठ गया.

बस थोड़ा आगे चली. फिर मेरे पास एक चाचा बैठे थे, वो वहां से उठ गए और बस रुकवा कर उतर गए. मुझे खुशी हुई, मैंने खड़े होकर दीदी को इशारा किया कि यहाँ जगह खाली है, आ जाओ.

वो मेरा इशारा समझ गयी और पीछे आ गयी.

फिर हम दोनों इधर उधर की बातें करने लगे. उसने पूछा कि कहां जा रहे हो ?

मैंने बताया कि शहर में पढ़ाई के लिए जा रहा हूँ, उधर एक हॉस्टल में रहता हूँ.

वो भी पढ़ाई के लिए ही शहर में ही किराये के कमरे में रहती है. हमने अपने मोबाइल नंबर एक दूसरे को दिए और इस तरह बातें करते करते शहर पहुंच गए. वो अपने कमरे पर चली

गयी और मैं मेरे हॉस्टल आ गया. दीदी का कमरा, जहां वो रहती थी, वो मेरे हॉस्टल से दूर था.

फिर एक दिन मैंने दीदी को ऐसे ही हाल चाल पूछने के लिए कॉल किया. बात करने के बाद दीदी ने कहा कि तुम मैसेज चैटिंग किया करो. तो मैंने मैसेज का रिचार्ज करवाया और उनसे चैटिंग करने लगा. अब रोज उनसे बात होने लगी और धीरे धीरे हम दोस्त जैसे हो गए. कोई भी बात हो तो बता देते थे.

एक दिन मैंने उनसे पूछ लिया कि आपका कोई बॉय फ्रेंड है ?

तो उन्होंने मेरी इस बात पर जरा भी गुस्सा नहीं किया और मुझे बताया कि उनका कोई बॉय फ्रेंड नहीं है.

तब तक मेरे मन में दीदी के लिए कुछ नहीं था. लेकिन जैसे जैसे बातें करते रहे, वैसे वैसे मुझे खुशी अच्छी लगने लगी थी. इस तरह समय निकल रहा था.

एक दिन हम चैट कर रहे थे. उस दिन इंडिया का क्रिकेट मैच चल रहा था. मैंने उससे कहा कि आज इंडिया जीतेगा !

तो उसने कहा कि हार जाएगा.

इसी बात पे बहस होने लगी तो मैंने कहा कि चलो शर्त लगाते हैं. अगर इंडिया हार गया तो आप जो कहोगी मैं करूंगा और अगर इंडिया जीत गया, तो जो मैं कहूंगा वो आपको करना पड़ेगा.

उस दिन इंडिया जीत भी गया.. लेकिन मैं शर्त को भूल गया.

लेकिन दोस्तो, इस शर्त की वजह से मुझे खुशी का प्यार मिला. हुआ ऐसा कि मैं दोस्तों के साथ बाहर घूमने गया था. रात को 9 बज गए थे, दीदी का फ़ोन आया.

उसने पूछा कि कहां हो ?

मैंने कहा कि मॉल में हूँ, अभी हॉस्टल जाऊंगा.

उसने कहा कि मेरे कमरे पर आ जाओ.. आज मैंने स्पेशल खाना बनाया है.

मैं भी खुशी से मिलना चाहता था. मैंने कहा- आपका कमरा मैंने नहीं देखा, कैसे आऊं ?

उसने मुझे एड्रेस दिया और कहा कि इस एड्रेस पे आओ, मैं तुम्हें घर के बाहर दिख जाऊंगी.

मेरे दोस्त के पास बाइक थी तो दोस्त को बोला कि उस एड्रेस पे पहुँचा दे.

जैसे ही मैं वहां पहुँचा, खुशी दीदी सामने खड़ी थी. वो बहुत खूबसूरत लग रही थी. दोस्त मुझे वहां उतार कर चला गया. मैंने दीदी को नमस्ते किया, फिर उसके साथ कमरे में चला गया.

दीदी ने कहा- जाओ हाथ मुँह धो लो, मैं खाना लगाती हूँ.

मैं हाथ मुँह धो कर आया, तब तक दीदी ने खाना लगा दिया था. हमने खाना खाया. फिर सोने का समय हुआ.

दीदी के कमरे पे सिर्फ एक पलंग था. दीदी मुझे आराम करने को कह कर कपड़े बदलने चली गई. मैं पलंग पे बैठ कर सोचने लगा कि आज मैं खुशी दीदी को अपने दिल की बात कह दूंगा.

दीदी कपड़े बदल कर वापस आई. हायईईईई.. पजामे और टी-शर्ट में वो क्या लग रही थी. मैं तो उसे देखता ही रह गया.

तभी दीदी ने टोका कि क्या देख रहे हो ?

तब मुझे होश आया और मैंने हड़बड़ाते हुए कहा- कुछ नहीं दीदी.

क्योंकि हम दोस्त की तरह थे तो मैंने कह दिया कि दीदी आप तो बहुत सेक्सी लग रही हो.

इस पर उसने इतराते हुए थैंक्स कहा और हंस पड़ी.

मैं सोच रहा था कि खुशी दीदी को कह दूँ, पर हिम्मत नहीं हुई. कमरे में सोने के लिए जगह नहीं थी तो मैंने कहा- दीदी में हॉस्टल चलता हूँ.

दीदी ने कहा कि इतनी रात को क्यों जाना है.. कल सुबह चले जाना.

मैंने बहुत मना किया, पर वो नहीं मानी. आखिर हार के मैंने कहा- ठीक है लेकिन हम यहाँ सोयेंगे कैसे ?

उसने कहा कि तुम पलंग पे सो जाओ और मैं नीचे सो जाऊँगी.

मैंने मना कर दिया- दीदी आप पलंग पे सो जाओ, मैं नीचे सो जाऊँगा.

फिर बहस होने लगी थी. मैंने कहा- चलो हम दोनों ही पलंग पे सो जाते हैं.

इस पर दीदी मान गई और हम दोनों ही पलंग पे सोने के लिए राजी हो गए. फिर लाइट बंद करके पलंग पे आ गए. अब हम दोनों पलंग पे लेट कर बातें कर रहे थे.

अचानक मुझे वो शर्त याद आई. मैंने दीदी को कहा- दीदी वो शर्त ?

तो दीदी बोली कि हां मुझे याद है.. बोलो क्या करवाना चाहते हो ?

थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने धीरे से खुद को कहा कि आज इसको सौ किस करने के लिए बोल देता हूँ

ये मेरी बुदबुदाहट दीदी ने सुन भी ली. वो बोली- किस करने को बोल रहे हो ?

मैं डर गया कि ओ तेरी.. दीदी ने सुन लिया, अब क्या होगा.

मैंने दीदी से कुछ नहीं कहा और दूसरी तरफ मुँह कर के सोने लगा. मन में यही चल रहा था कि दीदी बोली- क्या सोच रहे हो ?

थोड़ी देर बाद दीदी ने मुझे आवाज दी. क्रिशु..

दीदी प्यार से मुझे क्रिशु कहती है. मैं कुछ नहीं बोला तो उसने मुझे अपनी तरफ खींचा और मेरा चेहरा अपनी तरफ किया. अँधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा था.

दीदी ने धीरे से मेरे कान के पास आकर कहा- क्रिशु, अब शर्त लगी थी तो पूरी करनी पड़ेगी ना.

मैंने कुछ नहीं कहा.

दीदी ने कान में कहा- क्रिशु मैं सिर्फ गाल पे ही किस करूंगी.

मुझे सुन कर विश्वास नहीं हुआ कि दीदी किस के लिए तैयार है.

मैंने अभी भी कोई हरकत नहीं की. खुशी दीदी मेरे बिल्कुल करीब आ गई. वो मुझसे बिल्कुल चिपकी हुई थी, उनकी साँसें मैं महसूस कर रहा था. मेरे दिल की धड़कनें तेज हो रही थीं. खुशी मेरे गाल की तरफ बढ़ी और धीरे से मेरे गालों को अपने कोमल होंठों से छुआ.. मेरे शरीर में करंट दौड़ने लगा. 'हाआय्य्य.. ऐसा लग रहा था जैसे मुझे सारी खुशियां मिल गयी हों.

अब दीदी ने मेरे चेहरे को अपने हाथों में लिया और धीरे धीरे गाल पे किस करने लगी. मैं भूल गया था कि वो मेरी मामा की लड़की है. बस याद था तो खुशी के होंठ.. अभी मैं वो स्पर्श महसूस कर सकता हूँ.

मैं धीरे धीरे गर्म होने लगा था. दीदी अब किस मेरे होंठों के बहुत करीब कर रही थी. जो मुझे और उत्तेजित कर रहा था. दीदी की साँसें मुझसे टकरा रही थीं. अचानक दीदी ने मुझे मेरे होंठों पे किस किया.

आह्ह्ह.. हाआय्य्य.. अब मुझसे रहा नहीं जा रहा था. मैंने भी अपने होंठ चलाना शुरू किया. खुशी का कोई विरोध नहीं था. मैंने अपना हाथ खुशी के कमर पे रखा और अपनी

ओर खींचने लगा. खुशी भी उत्तेजित हो गयी थी. हम दोनों अपना होश खो चुके थे, बस याद था तो सिर्फ वो स्पर्श.

मुझे गर्मी लगने लगी थी. मैंने खुशी को रोका, तो खुशी रुक गयी. फिर मैंने अपने सारे कपड़े निकाल दिए.

खुशी से कहा तो खुशी ने कहा- तुम ही निकाल दो न क्रिशु.

मैंने खुशी के कपड़े उतारे. फिर वापस मैंने खुशी के होंठों की चूमना चालू कर दिया. फिर उसके खुशी की गर्दन में किस किया. खुशी गर्म थी, वो मुझे अपनी ओर खींचने लगी और अपने नाखून मेरी पीठ पे चुभोने लगी.

मैं खुशी के दूध चूसने लगा. फिर खुशी के पेट पे किस करने लगा. खुशी तिलमिला उठी. मुझे मेरे बाल पकड़ कर खींचने लगी. मेरा लंड पूरी तरह से खड़ा हो गया था. मुझसे सब्र नहीं हो रहा था.

मैंने खुशी से कहा- अब रहा नहीं जाता मुझे कुछ करना है.

खुशी की साँसें तेज चल रही थीं, वो कुछ नहीं बोली. मैंने अपने लंड को खुशी की चुत पे रखा तो खुशी ने मुझे रोक लिया और अपनी तरफ खींच कर अपनी बांहों में जकड़ लिया, मैंने भी खुशी को जोर से पकड़ लिया.

थोड़ी देर बाद खुशी ने कहा- आज नहीं क्रिशु प्लीज.

मैंने पूछा- क्यों ?

तो वो कहने लगी कि कोई सवाल मत करो, बस आज नहीं.

मुझे भी जबरदस्ती करना पसंद नहीं है तो मैं मान गया. हम दोनों ऐसे ही एक दूसरे की बांहों में थे.

तब खुशी ने कहा कि क्रिश्चु मैं तुमसे प्यार करती हूँ. प्लीज मुझे कभी धोखा मत देना. मैंने भी कहा कि मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ खुशी.. और मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा. उसने कहा- क्रिश्चु मैं तुम्हें कबसे कहना चाहती थी, पर रिश्ते की वजह से डरती थी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम दोनों ऐसे करेंगे.

ऐसा बोल कर उसने एक किस होंठों पे किया और हम दोनों बिना चुदाई किए एक दूसरे की बांहों में लिपट कर सो गए.

दोस्तो, ये थी मेरी और खुशी की कहानी जो मेरी अन्तर्वासना पर मेरी पहली कहानी है. पसंद आई या नहीं, मुझे मेल जरूर करना.

रोमियो

दोस्तो, मेरा नाम रोमियो है. मैं जयपुर के पास एक गांव का रहने वाला हूँ. मेरी उम्र 22 वर्ष है. जब मैं 18 साल का था तब कॉलेज की पढ़ाई के लिए मुझे शहर जाना था. पापा और मैं दोनों शहर गए. सबसे पहले कॉलेज में जा कर मेरा दाखिला कॉलेज में करवाया गया.

कॉलेज शहर से थोड़ा बाहर था.. वहीं पास में हॉस्टल था. पापा और मैं वहां गए और हॉस्टल के वार्डन से बात की. इसके बाद पापा ने मुझे वहीं रहने के लिए रख दिया और फीस जमा करवा दी. मुझे कुछ जरूरी सामान दिला कर पापा गाँव जाने के लिए कहने लगे. उनसे विछोह के कारण मैं कुछ उदास हो गया. शहर में किसी को जानता नहीं था. वैसे शहर में मेरे रिश्तेदार रहते थे, पर पापा नहीं चाहते थे कि मैं वहां जाऊं, इसलिए हॉस्टल में ही रखा.

पापा ने मुझे कुछ रुपये दिए और चले गए. मैं बहुत उदास था. वार्डन ने मुझे मेरा कमरा दिखाया तो मैं वहां गया और अपना जो भी सामान लाया था, वो वहां रख कर सो गया. शाम को जब नाश्ते का टाइम हुआ, तो एक लड़का उठाने आया तो मैं उठा.

नया सत्र चालू हुआ था तो अभी काफी लड़के आये नहीं थे. हम 8-10 लोग ही थे. उसी दौरान उन सबसे जान पहचान हुई. वो सब लोग भी मेरी तरह पहली बार घर छोड़ कर आये थे. उनसे बात होने के बाद थोड़ा अच्छा लगा. सबने बाहर घूमने जाने का प्लान बनाया, जिससे सबका मन शहर में लग जाए.

मैं भी जाने को तैयार हो गया. हम सब लोग घूमने गए और रात को दस बजे आये. वार्डन हॉस्टल में नहीं था इसलिए कोई प्रॉब्लम नहीं हुई. फिर ऐसे ही 1-2 महीने निकल गए. अब सब अच्छा लगने लगा था.

घर की याद भी कम आने लगी थी, लेकिन घर तो घर है. घर वालों से मिले हुए बहुत समय हो गया था, इसलिए घर जाने का मन था. ऐसे में एक हफ्ते की कॉलेज की छुट्टी हुई.. तो सब लड़के घर जाने के लिए तैयारी करने लगे. मैंने भी अपने कपड़े पैक किये और सब दोस्तों को बाय बोलकर गाँव आ गया. घर आकर अच्छा लग रहा था. माँ भी खुश हुई.

एक हफ्ता कैसे निकला, पता ही नहीं चला. वापस हॉस्टल जाने का टाइम हो गया. तैयार हो कर मैं बस स्टैंड आया.. बस की टिकट ली और बस में चढ़ गया. जैसे ही बस में चढ़ा तो मैंने एक लड़की को देखा. वो मेरे मामा की लड़की खुशी थी. वो बहुत खूबसूरत थी, उसने इस वक्त पटियाला सूट पहना था.

वो भी मुझे पहचान गयी. मुझे देखकर वो बहुत खुश हुई. वो मुझसे 4 साल बड़ी थी. मैं भी उसे देख कर खुश हुआ. उसे मैंने हैलो बोला, उसने भी मुझे हैलो बोला. मैं उसके पास ही बैठना चाहता था, लेकिन वहां कोई सीट खाली नहीं थी.

मैंने कहा- यहाँ जगह नहीं है, मैं पीछे जाकर बैठता हूँ.

मैं बस में पीछे की सीट पर जाकर बैठ गया.

बस थोड़ा आगे चली. फिर मेरे पास एक चाचा बैठे थे, वो वहां से उठ गए और बस रुकवा

कर उतर गए. मुझे खुशी हुई, मैंने खड़े होकर दीदी को इशारा किया कि यहां जगह खाली है, आ जाओ.

वो मेरा इशारा समझ गयी और पीछे आ गयी.

फिर हम दोनों इधर उधर की बातें करने लगे. उसने पूछा कि कहां जा रहे हो ? मैंने बताया कि शहर में पढ़ाई के लिए जा रहा हूँ, उधर एक हॉस्टल में रहता हूँ.

वो भी पढ़ाई के लिए ही शहर में ही किराये के कमरे में रहती है. हमने अपने मोबाइल नंबर एक दूसरे को दिए और इस तरह बातें करते करते शहर पहुंच गए. वो अपने कमरे पर चली गयी और मैं मेरे हॉस्टल आ गया. दीदी का कमरा, जहां वो रहती थी, वो मेरे हॉस्टल से दूर था.

फिर एक दिन मैंने दीदी को ऐसे ही हाल चाल पूछने के लिए कॉल किया. बात करने के बाद दीदी ने कहा कि तुम मैसेज चैटिंग किया करो. तो मैंने मैसेज का रिचार्ज करवाया और उनसे चैटिंग करने लगा. अब रोज उनसे बात होने लगी और धीरे धीरे हम दोस्त जैसे हो गए. कोई भी बात हो तो बता देते थे.

एक दिन मैंने उनसे पूछ लिया कि आपका कोई बॉय फ्रेंड है ?

तो उन्होंने मेरी इस बात पर जरा भी गुस्सा नहीं किया और मुझे बताया कि उनका कोई बॉय फ्रेंड नहीं है.

तब तक मेरे मन में दीदी के लिए कुछ नहीं था. लेकिन जैसे जैसे बातें करते रहे, वैसे वैसे मुझे खुशी अच्छी लगने लगी थी. इस तरह समय निकल रहा था.

एक दिन हम चैट कर रहे थे. उस दिन इंडिया का क्रिकेट मैच चल रहा था. मैंने उससे कहा कि आज इंडिया जीतेगा !

तो उसने कहा कि हार जाएगा.

इसी बात पे बहस होने लगी तो मैंने कहा कि चलो शर्त लगाते हैं. अगर इंडिया हार गया तो आप जो कहोगी मैं करूँगा और अगर इंडिया जीत गया, तो जो मैं कहूँगा वो आपको करना पड़ेगा.

उस दिन इंडिया जीत भी गया.. लेकिन मैं शर्त को भूल गया.

लेकिन दोस्तो, इस शर्त की वजह से मुझे खुशी का प्यार मिला. हुआ ऐसा कि मैं दोस्तों के साथ बाहर घूमने गया था. रात को 9 बज गए थे, दीदी का फ़ोन आया.

उसने पूछा कि कहां हो ?

मैंने कहा कि मॉल में हूँ, अभी हॉस्टल जाऊंगा.

उसने कहा कि मेरे कमरे पर आ जाओ.. आज मैंने स्पेशल खाना बनाया है.

मैं भी खुशी से मिलना चाहता था. मैंने कहा- आपका कमरा मैंने नहीं देखा, कैसे आऊं ?

उसने मुझे एड्रेस दिया और कहा कि इस एड्रेस पे आओ, मैं तुम्हें घर के बाहर दिख जाऊंगी.

मेरे दोस्त के पास बाइक थी तो दोस्त को बोला कि उस एड्रेस पे पहुँचा दे.

जैसे ही मैं वहां पहुँचा, खुशी दीदी सामने खड़ी थी. वो बहुत खूबसूरत लग रही थी. दोस्त मुझे वहां उतार कर चला गया. मैंने दीदी को नमस्ते किया, फिर उसके साथ कमरे में चला गया.

दीदी ने कहा- जाओ हाथ मुँह धो लो, मैं खाना लगाती हूँ.

मैं हाथ मुँह धो कर आया, तब तक दीदी ने खाना लगा दिया था. हमने खाना खाया. फिर सोने का समय हुआ.

दीदी के कमरे पे सिर्फ एक पलंग था. दीदी मुझे आराम करने को कह कर कपड़े बदलने चली गई. मैं पलंग पे बैठ कर सोचने लगा कि आज मैं खुशी दीदी को अपने दिल की बात कह

दूंगा.

दीदी कपड़े बदल कर वापस आई. हायईईईई.. पजामे और टी-शर्ट में वो क्या लग रही थी. मैं तो उसे देखता ही रह गया.

तभी दीदी ने टोका कि क्या देख रहे हो ?

तब मुझे होश आया और मैंने हड़बड़ाते हुए कहा- कुछ नहीं दीदी.

क्योंकि हम दोस्त की तरह थे तो मैंने कह दिया कि दीदी आप तो बहुत सेक्सी लग रही हो.

इस पर उसने इतराते हुए थैंक्स कहा और हंस पड़ी.

मैं सोच रहा था कि खुशी दीदी को कह दूँ, पर हिम्मत नहीं हुई. कमरे में सोने के लिए जगह नहीं थी तो मैंने कहा- दीदी में हॉस्टल चलता हूँ.

दीदी ने कहा कि इतनी रात को क्यों जाना है.. कल सुबह चले जाना.

मैंने बहुत मना किया, पर वो नहीं मानी. आखिर हार के मैंने कहा- ठीक है लेकिन हम यहाँ सोयेंगे कैसे ?

उसने कहा कि तुम पलंग पे सो जाओ और मैं नीचे सो जाऊँगी.

मैंने मना कर दिया- दीदी आप पलंग पे सो जाओ, मैं नीचे सो जाऊँगा.

फिर बहस होने लगी थी. मैंने कहा- चलो हम दोनों ही पलंग पे सो जाते हैं.

इस पर दीदी मान गई और हम दोनों ही पलंग पे सोने के लिए राजी हो गए. फिर लाइट बंद करके पलंग पे आ गए. अब हम दोनों पलंग पे लेट कर बातें कर रहे थे.

अचानक मुझे वो शर्त याद आई. मैंने दीदी को कहा- दीदी वो शर्त ?

तो दीदी बोली कि हां मुझे याद है.. बोलो क्या करवाना चाहते हो ?

थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने धीरे से खुद को कहा कि आज इसको सौ किस करने के लिए

बोल देता हूँ

ये मेरी बुदबुदाहट दीदी ने सुन भी ली. वो बोली- किस करने को बोल रहे हो ?

मैं डर गया कि ओ तेरी.. दीदी ने सुन लिया, अब क्या होगा.

मैंने दीदी से कुछ नहीं कहा और दूसरी तरफ मुँह कर के सोने लगा. मन में यही चल रहा था कि दीदी बोली- क्या सोच रहे हो ?

थोड़ी देर बाद दीदी ने मुझे आवाज दी. क्रिशु..

दीदी प्यार से मुझे क्रिशु कहती है. मैं कुछ नहीं बोला तो उसने मुझे अपनी तरफ खींचा और मेरा चेहरा अपनी तरफ किया. अँधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा था.

दीदी ने धीरे से मेरे कान के पास आकर कहा- क्रिशु, अब शर्त लगी थी तो पूरी करनी पड़ेगी ना.

मैंने कुछ नहीं कहा.

दीदी ने कान में कहा- क्रिशु मैं सिर्फ गाल पे ही किस करूंगी.

मुझे सुन कर विश्वास नहीं हुआ कि दीदी किस के लिए तैयार है.

मैंने अभी भी कोई हरकत नहीं की. खुशी दीदी मेरे बिल्कुल करीब आ गई. वो मुझसे बिल्कुल चिपकी हुई थी, उनकी साँसें मैं महसूस कर रहा था. मेरे दिल की धड़कनें तेज हो रही थीं. खुशी मेरे गाल की तरफ बढ़ी और धीरे से मेरे गालों को अपने कोमल होंठों से छुआ.. मेरे शरीर में करंट दौड़ने लगा. 'हाआय्य्य्य.. ऐसा लग रहा था जैसे मुझे सारी खुशियां मिल गयी हों.

अब दीदी ने मेरे चेहरे को अपने हाथों में लिया और धीरे धीरे गाल पे किस करने लगी. मैं

भूल गया था कि वो मेरी मामा की लड़की है. बस याद था तो खुशी के होंठ.. अभी मैं वो स्पर्श महसूस कर सकता हूँ.

मैं धीरे धीरे गर्म होने लगा था. दीदी अब किस मेरे होंठों के बहुत करीब कर रही थी. जो मुझे और उत्तेजित कर रहा था. दीदी की साँसें मुझसे टकरा रही थीं. अचानक दीदी ने मुझे मेरे होंठों पे किस किया.

आह्ह्ह.. हाआय्य.. अब मुझसे रहा नहीं जा रहा था. मैंने भी अपने होंठ चलाना शुरू किया. खुशी का कोई विरोध नहीं था. मैंने अपना हाथ खुशी के कमर पे रखा और अपनी ओर खींचने लगा. खुशी भी उत्तेजित हो गयी थी. हम दोनों अपना होश खो चुके थे, बस याद था तो सिर्फ वो स्पर्श.

मुझे गर्मी लगने लगी थी. मैंने खुशी को रोका, तो खुशी रुक गयी. फिर मैंने अपने सारे कपड़े निकाल दिए.

खुशी से कहा तो खुशी ने कहा- तुम ही निकाल दो न क्रिश्नु.

मैंने खुशी के कपड़े उतारे. फिर वापस मैंने खुशी के होंठों की चूमना चालू कर दिया. फिर उसके खुशी की गर्दन में किस किया. खुशी गर्म थी, वो मुझे अपनी ओर खींचने लगी और अपने नाखून मेरी पीठ पे चुभोने लगी.

मैं खुशी के दूध चूसने लगा. फिर खुशी के पेट पे किस करने लगा. खुशी तिलमिला उठी. मुझे मेरे बाल पकड़ कर खींचने लगी. मेरा लंड पूरी तरह से खड़ा हो गया था. मुझसे सब्र नहीं हो रहा था.

मैंने खुशी से कहा- अब रहा नहीं जाता मुझे कुछ करना है.

खुशी की साँसें तेज चल रही थीं, वो कुछ नहीं बोली. मैंने अपने लंड को खुशी की चुत पे

रखा तो खुशी ने मुझे रोक लिया और अपनी तरफ खींच कर अपनी बांहों में जकड़ लिया, मैंने भी खुशी को जोर से पकड़ लिया.

थोड़ी देर बाद खुशी ने कहा- आज नहीं क्रिशु प्लीज.

मैंने पूछा- क्यों ?

तो वो कहने लगी कि कोई सवाल मत करो, बस आज नहीं.

मुझे भी जबरदस्ती करना पसंद नहीं है तो मैं मान गया. हम दोनों ऐसे ही एक दूसरे की बांहों में थे.

तब खुशी ने कहा कि क्रिशु मैं तुमसे प्यार करती हूँ. प्लीज मुझे कभी धोखा मत देना. मैंने भी कहा कि मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ खुशी.. और मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा. उसने कहा- क्रिशु मैं तुम्हें कबसे कहना चाहती थी, पर रिश्ते की वजह से डरती थी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम दोनों ऐसे करेंगे.

ऐसा बोल कर उसने एक किस होंठों पे किया और हम दोनों बिना चुदाई किए एक दूसरे की बांहों में लिपट कर सो गए.

दोस्तो, ये थी मेरी और खुशी की कहानी जो मेरी अन्तर्वासना पर मेरी पहली कहानी है. पसंद आई या नहीं, मुझे मेल जरूर करना.

रोमियो

दोस्तो, मेरा नाम रोमियो है. मैं जयपुर के पास एक गांव का रहने वाला हूँ. मेरी उम्र 22 वर्ष है. जब मैं 18 साल का था तब कॉलेज की पढ़ाई के लिए मुझे शहर जाना था. पापा और मैं दोनों शहर गए. सबसे पहले कॉलेज में जा कर मेरा दाखिला कॉलेज में करवाया गया.

कॉलेज शहर से थोड़ा बाहर था.. वहीं पास में हॉस्टल था. पापा और मैं वहां गए और

हॉस्टल के वार्डन से बात की. इसके बाद पापा ने मुझे वहीं रहने के लिए रख दिया और फीस जमा करवा दी. मुझे कुछ जरूरी सामान दिला कर पापा गाँव जाने के लिए कहने लगे. उनसे विछोह के कारण मैं कुछ उदास हो गया. शहर में किसी को जानता नहीं था. वैसे शहर में मेरे रिश्तेदार रहते थे, पर पापा नहीं चाहते थे कि मैं वहां जाऊं, इसलिए हॉस्टल में ही रखा.

पापा ने मुझे कुछ रुपये दिए और चले गए. मैं बहुत उदास था. वार्डन ने मुझे मेरा कमरा दिखाया तो मैं वहां गया और अपना जो भी सामान लाया था, वो वहां रख कर सो गया. शाम को जब नाश्ते का टाइम हुआ, तो एक लड़का उठाने आया तो मैं उठा.

नया सत्र चालू हुआ था तो अभी काफी लड़के आये नहीं थे. हम 8-10 लोग ही थे. उसी दौरान उन सबसे जान पहचान हुई. वो सब लोग भी मेरी तरह पहली बार घर छोड़ कर आये थे. उनसे बात होने के बाद थोड़ा अच्छा लगा. सबने बाहर घूमने जाने का प्लान बनाया, जिससे सबका मन शहर में लग जाए.

मैं भी जाने को तैयार हो गया. हम सब लोग घूमने गए और रात को दस बजे आये. वार्डन हॉस्टल में नहीं था इसलिए कोई प्रॉब्लम नहीं हुई. फिर ऐसे ही 1-2 महीने निकल गए. अब सब अच्छा लगने लगा था.

घर की याद भी कम आने लगी थी, लेकिन घर तो घर है. घर वालों से मिले हुए बहुत समय हो गया था, इसलिए घर जाने का मन था. ऐसे में एक हफ्ते की कॉलेज की छुट्टी हुई.. तो सब लड़के घर जाने के लिए तैयारी करने लगे. मैंने भी अपने कपड़े पैक किये और सब दोस्तों को बाय बोलकर गाँव आ गया. घर आकर अच्छा लग रहा था. माँ भी खुश हुई.

एक हफ्ता कैसे निकला, पता ही नहीं चला. वापस हॉस्टल जाने का टाइम हो गया. तैयार हो कर मैं बस स्टैंड आया.. बस की टिकट ली और बस में चढ़ गया. जैसे ही बस में चढ़ा तो

मैंने एक लड़की को देखा. वो मेरे मामा की लड़की खुशी थी. वो बहुत खूबसूरत थी, उसने इस वक्त पटियाला सूट पहना था.

वो भी मुझे पहचान गयी. मुझे देखकर वो बहुत खुश हुई. वो मुझसे 4 साल बड़ी थी. मैं भी उसे देख कर खुश हुआ. उसे मैंने हैलो बोला, उसने भी मुझे हैलो बोला. मैं उसके पास ही बैठना चाहता था, लेकिन वहां कोई सीट खाली नहीं थी.

मैंने कहा- यहाँ जगह नहीं है, मैं पीछे जाकर बैठता हूँ.

मैं बस में पीछे की सीट पर जाकर बैठ गया.

बस थोड़ा आगे चली. फिर मेरे पास एक चाचा बैठे थे, वो वहां से उठ गए और बस रुकवा कर उतर गए. मुझे खुशी हुई, मैंने खड़े होकर दीदी को इशारा किया कि यहाँ जगह खाली है, आ जाओ.

वो मेरा इशारा समझ गयी और पीछे आ गयी.

फिर हम दोनों इधर उधर की बातें करने लगे. उसने पूछा कि कहां जा रहे हो ?

मैंने बताया कि शहर में पढ़ाई के लिए जा रहा हूँ, उधर एक हॉस्टल में रहता हूँ.

वो भी पढ़ाई के लिए ही शहर में ही किराये के कमरे में रहती है. हमने अपने मोबाइल नंबर एक दूसरे को दिए और इस तरह बातें करते करते शहर पहुंच गए. वो अपने कमरे पर चली गयी और मैं मेरे हॉस्टल आ गया. दीदी का कमरा, जहां वो रहती थी, वो मेरे हॉस्टल से दूर था.

फिर एक दिन मैंने दीदी को ऐसे ही हाल चाल पूछने के लिए कॉल किया. बात करने के बाद दीदी ने कहा कि तुम मैसेज चैटिंग किया करो. तो मैंने मैसेज का रिचार्ज करवाया और उनसे चैटिंग करने लगा. अब रोज उनसे बात होने लगी और धीरे धीरे हम दोस्त जैसे हो गए. कोई भी बात हो तो बता देते थे.

एक दिन मैंने उनसे पूछ लिया कि आपका कोई बॉय फ्रेंड है ?

तो उन्होंने मेरी इस बात पर जरा भी गुस्सा नहीं किया और मुझे बताया कि उनका कोई बॉय फ्रेंड नहीं है.

तब तक मेरे मन में दीदी के लिए कुछ नहीं था. लेकिन जैसे जैसे बातें करते रहे, वैसे वैसे मुझे खुशी अच्छी लगने लगी थी. इस तरह समय निकल रहा था.

एक दिन हम चैट कर रहे थे. उस दिन इंडिया का क्रिकेट मैच चल रहा था. मैंने उससे कहा कि आज इंडिया जीतेगा !

तो उसने कहा कि हार जाएगा.

इसी बात पे बहस होने लगी तो मैंने कहा कि चलो शर्त लगाते हैं. अगर इंडिया हार गया तो आप जो कहोगी मैं करूँगा और अगर इंडिया जीत गया, तो जो मैं कहूँगा वो आपको करना पड़ेगा.

उस दिन इंडिया जीत भी गया.. लेकिन मैं शर्त को भूल गया.

लेकिन दोस्तो, इस शर्त की वजह से मुझे खुशी का प्यार मिला. हुआ ऐसा कि मैं दोस्तों के साथ बाहर घूमने गया था. रात को 9 बज गए थे, दीदी का फ़ोन आया.

उसने पूछा कि कहां हो ?

मैंने कहा कि मॉल में हूँ, अभी हॉस्टल जाऊँगा.

उसने कहा कि मेरे कमरे पर आ जाओ.. आज मैंने स्पेशल खाना बनाया है.

मैं भी खुशी से मिलना चाहता था. मैंने कहा- आपका कमरा मैंने नहीं देखा, कैसे आऊं ?

उसने मुझे एड्रेस दिया और कहा कि इस एड्रेस पे आओ, मैं तुम्हें घर के बाहर दिख जाऊंगी.

मेरे दोस्त के पास बाइक थी तो दोस्त को बोला कि उस एड्रेस पे पहुँचा दे.

जैसे ही मैं वहां पहुँचा, खुशी दीदी सामने खड़ी थी. वो बहुत खूबसूरत लग रही थी. दोस्त

मुझे वहां उतार कर चला गया. मैंने दीदी को नमस्ते किया, फिर उसके साथ कमरे में चला गया.

दीदी ने कहा- जाओ हाथ मुँह धो लो, मैं खाना लगाती हूँ.

मैं हाथ मुँह धो कर आया, तब तक दीदी ने खाना लगा दिया था. हमने खाना खाया. फिर सोने का समय हुआ.

दीदी के कमरे पे सिर्फ एक पलंग था. दीदी मुझे आराम करने को कह कर कपड़े बदलने चली गई. मैं पलंग पे बैठ कर सोचने लगा कि आज मैं खुशी दीदी को अपने दिल की बात कह दूंगा.

दीदी कपड़े बदल कर वापस आई. हायईईई.. पजामे और टी-शर्ट में वो क्या लग रही थी. मैं तो उसे देखता ही रह गया.

तभी दीदी ने टोका कि क्या देख रहे हो ?

तब मुझे होश आया और मैंने हड़बड़ाते हुए कहा- कुछ नहीं दीदी.

क्योंकि हम दोस्त की तरह थे तो मैंने कह दिया कि दीदी आप तो बहुत सेक्सी लग रही हो. इस पर उसने इतराते हुए थैंक्स कहा और हंस पड़ी.

मैं सोच रहा था कि खुशी दीदी को कह दूँ, पर हिम्मत नहीं हुई. कमरे में सोने के लिए जगह नहीं थी तो मैंने कहा- दीदी में हॉस्टल चलता हूँ.

दीदी ने कहा कि इतनी रात को क्यों जाना है.. कल सुबह चले जाना.

मैंने बहुत मना किया, पर वो नहीं मानी. आखिर हार के मैंने कहा- ठीक है लेकिन हम यहाँ सोयेंगे कैसे ?

उसने कहा कि तुम पलंग पे सो जाओ और मैं नीचे सो जाऊँगी.

मैंने मना कर दिया- दीदी आप पलंग पे सो जाओ, मैं नीचे सो जाऊंगा.
फिर बहस होने लगी थी. मैंने कहा- चलो हम दोनों ही पलंग पे सो जाते हैं.

इस पर दीदी मान गई और हम दोनों ही पलंग पे सोने के लिए राजी हो गए. फिर लाइट बंद करके पलंग पे आ गए. अब हम दोनों पलंग पे लेट कर बातें कर रहे थे.

अचानक मुझे वो शर्त याद आई. मैंने दीदी को कहा- दीदी वो शर्त ?
तो दीदी बोली कि हां मुझे याद है.. बोलो क्या करवाना चाहते हो ?

थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने धीरे से खुद को कहा कि आज इसको सौ किस करने के लिए बोल देता हूँ

ये मेरी बुदबुदाहट दीदी ने सुन भी ली. वो बोली- किस करने को बोल रहे हो ?

मैं डर गया कि ओ तेरी.. दीदी ने सुन लिया, अब क्या होगा.

मैंने दीदी से कुछ नहीं कहा और दूसरी तरफ मुँह कर के सोने लगा. मन में यही चल रहा था कि दीदी बोली- क्या सोच रहे हो ?

थोड़ी देर बाद दीदी ने मुझे आवाज दी. क्रिशु..

दीदी प्यार से मुझे क्रिशु कहती है. मैं कुछ नहीं बोला तो उसने मुझे अपनी तरफ खींचा और मेरा चेहरा अपनी तरफ किया. अँधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा था.

दीदी ने धीरे से मेरे कान के पास आकर कहा- क्रिशु, अब शर्त लगी थी तो पूरी करनी पड़ेगी ना.

मैंने कुछ नहीं कहा.

दीदी ने कान में कहा- क्रिशु मैं सिर्फ गाल पे ही किस करूंगी.

मुझे सुन कर विश्वास नहीं हुआ कि दीदी किस के लिए तैयार है.

मैंने अभी भी कोई हरकत नहीं की. खुशी दीदी मेरे बिल्कुल करीब आ गई. वो मुझसे बिल्कुल चिपकी हुई थी, उनकी साँसें मैं महसूस कर रहा था. मेरे दिल की धड़कनें तेज हो रही थीं. खुशी मेरे गाल की तरफ बढ़ी और धीरे से मेरे गालों को अपने कोमल होंठों से छुआ.. मेरे शरीर में करंट दौड़ने लगा. 'हाआय्य्य.. ऐसा लग रहा था जैसे मुझे सारी खुशियां मिल गयी हों.

अब दीदी ने मेरे चेहरे को अपने हाथों में लिया और धीरे धीरे गाल पे किस करने लगी. मैं भूल गया था कि वो मेरी मामा की लड़की है. बस याद था तो खुशी के होंठ.. अभी मैं वो स्पर्श महसूस कर सकता हूँ.

मैं धीरे धीरे गर्म होने लगा था. दीदी अब किस मेरे होंठों के बहुत करीब कर रही थी. जो मुझे और उत्तेजित कर रहा था. दीदी की साँसें मुझसे टकरा रही थीं. अचानक दीदी ने मुझे मेरे होंठों पे किस किया.

आह्हूह.. हाआय्य.. अब मुझसे रहा नहीं जा रहा था. मैंने भी अपने होंठ चलाना शुरू किया. खुशी का कोई विरोध नहीं था. मैंने अपना हाथ खुशी के कमर पे रखा और अपनी ओर खींचने लगा. खुशी भी उत्तेजित हो गयी थी. हम दोनों अपना होश खो चुके थे, बस याद था तो सिर्फ वो स्पर्श.

मुझे गर्मी लगने लगी थी. मैंने खुशी को रोका, तो खुशी रुक गयी. फिर मैंने अपने सारे कपड़े निकाल दिए.

खुशी से कहा तो खुशी ने कहा- तुम ही निकाल दो न क्रिश्नु.

मैंने खुशी के कपड़े उतारे. फिर वापस मैंने खुशी के होंठों की चूमना चालू कर दिया. फिर

उसके खुशी की गर्दन में किस किया. खुशी गर्म थी, वो मुझे अपनी ओर खींचने लगी और अपने नाखून मेरी पीठ पे चुभोने लगी.

मैं खुशी के दूध चूसने लगा. फिर खुशी के पेट पे किस करने लगा. खुशी तिलमिला उठी. मुझे मेरे बाल पकड़ कर खींचने लगी. मेरा लंड पूरी तरह से खड़ा हो गया था. मुझसे सब्र नहीं हो रहा था.

मैंने खुशी से कहा- अब रहा नहीं जाता मुझे कुछ करना है.

खुशी की साँसें तेज चल रही थीं, वो कुछ नहीं बोली. मैंने अपने लंड को खुशी की चुत पे रखा तो खुशी ने मुझे रोक लिया और अपनी तरफ खींच कर अपनी बांहों में जकड़ लिया, मैंने भी खुशी को जोर से पकड़ लिया.

थोड़ी देर बाद खुशी ने कहा- आज नहीं क्रिशु प्लीज.

मैंने पूछा- क्यों ?

तो वो कहने लगी कि कोई सवाल मत करो, बस आज नहीं.

मुझे भी जबरदस्ती करना पसंद नहीं है तो मैं मान गया. हम दोनों ऐसे ही एक दूसरे की बांहों में थे.

तब खुशी ने कहा कि क्रिशु मैं तुमसे प्यार करती हूँ. प्लीज मुझे कभी धोखा मत देना.

मैंने भी कहा कि मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ खुशी.. और मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा.

उसने कहा- क्रिशु मैं तुम्हें कबसे कहना चाहती थी, पर रिश्ते की वजह से डरती थी, मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम दोनों ऐसे करेंगे.

ऐसा बोल कर उसने एक किस होंठों पे किया और हम दोनों बिना चुदाई किए एक दूसरे की बांहों में लिपट कर सो गए.

दोस्तो, ये थी मेरी और खुशी की कहानी जो मेरी अन्तर्वासना पर मेरी पहली कहानी है.
पसंद आई या नहीं, मुझे मेल जरूर करना.

रोमियो

romeoraza77@gmail.com

